खंड: 5, अंक: 4

अप्रैल 2022

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

रूस–यूक्रेन संघर्ष: एक कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर

© सी जी एस 2022

रूपांकन-काजल

संश्लेषण

रूस–यूक्रेन संघर्ष: एक कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. रुस–यूक्रेन संघर्ष – डॉ. अमृता सोनी 3–8
   – गीतेश वागद्र
2. रूस की पुनः सोवियतीकरण की नीतिः कज़ाख़िस्तान के सन्दर्भ में 9–14
   – चित्रा राजौरा
3. रूस–यूक्रेन संघर्षः एक कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य – सौरभ प्रताप सिंह 15–18
4. रूस–यूक्रेन युद्ध एवं परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय अवधारणा – गरिमा शर्मा 19–21
5. रूस–यूक्रेन युद्धः भारतीय निष्पक्षता की नीति – सृष्टि 22–24

संपादकीय

वैश्विक अध्ययन केंद्र की मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 45वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः हर्ष एवं उल्लास का अनुभव हो रहा है। वर्ष 2018 से केंद्र अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने के लिए संकल्पित रहा है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 21वीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण घटना जिसने मानवता को तृतीय विश्व युद्ध की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया रुस–यूक्रेन संघर्ष रहा है। फरवरी 2022 से आरंभ रुस–यूक्रेन संघर्ष को दो महाशक्तियों के मध्य एक परोक्ष युद्ध के रुप में देखा जा सकता है। वर्ष 1991 में सोवियत विघटन के पश्चात रुस–यूक्रेन संबंध मित्रता से शत्रुता की ओर उन्मुख होते चले गये। 2014 में रुस द्वारा क्रीमिया पर आक्रमण तथा अधिग्रहण ने रुस–यूक्रेन संबंध को संघर्ष की ओर परिणित कर दिया। सोवियत विघटन के पश्चात भौगोलिक रुप से यूक्रेन में विस्थापित रुसी समर्थक नागरिकों ने सदैव रुस के प्रति ही अपनी निष्ठा व्यक्त की है। यूक्रेन द्वारा नाटो सदस्यता प्राप्ति के प्रयास रुस–यूक्रेन संघर्ष के त्वरित कारकों में से एक है। यद्यपि महानायक रुसी राष्ट्रपति पुतिन एवं नायक यूक्रेनी राष्ट्रपति जैलेन्सकी के मध्य यह संघर्ष आरंभ में स्थानिक प्रतीत हो रहा था किन्तु यूरोप एवं अमेरिका का यूक्रेन के समर्थन में खडे होने से यह संघर्ष पूर्णरुपेण युद्ध में परिणित होता दृष्टिगोचर होने लगा।

रुस–यूक्रेन संघर्ष ने एक बार पुनः समस्त विश्व को युद्धरत राष्ट्रों के समर्थन एवं विरोध में खडे होने के लिए बाध्य कर दिया। वैश्विक स्तर पर परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'रुस–युक्रेन संघर्षः एक कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ वैश्विक आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

संपादक मंडल

शनिवार, 14 मई 2022

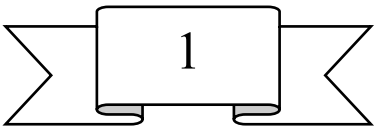

1

रुस–यूक्रेन संघर्ष

डॉ. अमृता सोनी
सहायक प्राध्यापक, सैफिया लॉ कॉलेज, भोपाल
गीतेश वागद्रे
सहायक प्राध्यापक, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल

युद्ध चाहे किसी भी कारण से हो वो सदैव विनाश ही लाता है। देश व लोगों की प्रगति पर एक विराम सा लग जाता है। वर्तमान में अभी कुछ ऐसा ही रुस और यूक्रेन के मध्य चल रहा है, इस युद्ध का कारण यूक्रेन का नाटो की ओर झुकाव और उसमें सम्मिलित होने की मंशा है, यूक्रेन की यह इच्छा और यूक्रेन पर बढता यूरोपीयन प्रभाव रूस को अपने देश के लिए संकट प्रतित होता है। अतः 24 फरवरी 2022 को 5:00 बजे के आस–पास रूस ने पूर्वी यूक्रेन में विशेष सैन्य अभियान की घोषणा की, और कुछ ही समय पश्चात् राजधानी कीव सहित यूक्रेन मे मिसाईल आकमण शुरू हो गए, और इसके साथ ही यूक्रेन के राष्ट्रपति ने पूरे देश में मार्शल लॉ लागू कर दिया। यूक्रेन संकट अब सीमा से बाहर हो गया है, रूस यूक्रेन के कथित 'विसैन्यीकरण' और 'नाजी प्रभाव मुक्ति' (Demilitarise and Denazify) के लिये आक्रमण करके पूर्वी यूक्रेन (डोनबास क्षेत्र) के डोनेट्स्क (Donetsk) और लुहान्स्क (Luhansk) विद्रोही क्षेत्रों जो कि रूस समर्थक है उनको मान्यता प्रदान कर रहा है। मॉस्को का यह निर्णय यूरोप में राष्ट्रीय सीमाओं का उल्लंघन नहीं करने पर वर्ष 1975 के हेलसिंकी समझौते में व्यक्त सहमति को अस्वीकार करता है, जो कि वैश्विक व्यवस्था के लिये एक बड़ी चुनौती है। भारत के लिये एक ओर जहाँ रूस बडा सहयोगी रहा है एवं सैन्य उपकरणों का सबसे बड़ा व समय मानकों पर आपूर्तिकर्ता बना रहा है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका, यूरोपीय संघ एवं यू.के. भी भारत के महत्त्वपूर्ण भागीदार हैं जिन्हें कोधित करने का संकट नहीं उठाया जा सकता। भारत के रणनीतिक हितों को ध्यान में रखते हुए भारत ने अब तक जिस तरह संतुलित दृष्टिकोण का पालन किया है, वही उपयुक्त व्यावहारिक माध्यम हो सकता है।

पृष्ठभूमिः

- उत्तर–सोवियत संदर्भ और नारंगी क्रांतिः

1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात्, यूक्रेन और रूस ने घनिष्ठ संबंध बनाए रखे व वर्ष 1994 में, यूक्रेन ने अपने परमाणु शस्त्रागारों को छोड़ने पर सहमति व्यक्त की और बुडापेस्ट ज्ञापन पर इस शर्त पर हस्ताक्षर किए कि रूस, यूनाइटेड किंगडम (यू के) एवं संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) क्षेत्रीय के विरूद्ध संकटों या बल के उपयोग के विरूद्ध आश्वासन प्रदान करेंगे। पांच वर्ष पश्चात्, रूस यूरोपीय सुरक्षा के लिए चार्टर के हस्ताक्षरकर्ताओं में से एक था, जिसने ''प्रत्येक भाग लेने वाले राज्य के निहित अधिकार की पुष्टि की कि वे गठबंधन की संधियों सहित, अपनी सुरक्षा व्यवस्था का चुनाव करने या परिवर्तित करने के लिए स्वतंत्र हैं, जैसा कि वे विकसित होते हैं''।

2004 में, तत्कालीन प्रधान मंत्री, विक्टर यानुकोविच को राष्ट्रपति चुनावों का विजेता घोषित किया गया था, जिसमे कि यूक्रेन के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार, चुनावों में व्रहत् स्तर पर धांधली की गई थी। परिणामों को चुनौती देने के फलस्वरूप विपक्षी उम्मीदवार विक्टर युशचेंको क समर्थन में सार्वजनिक आक्रोश उत्पन्न हुआ। इस क्रांति के अशांत महीनों के दौरान, उम्मीदवार युशचेंको अचानक गंभीर रूप से बीमार हो गए, चिकित्सकों के समूहों द्वारा जाँच में यह पाया गया कि उन्हें TCDD डाइऑक्सिन द्वारा जहर दिया गया है।, युशचेंको को दिए गए जहर में रूस के सम्मिलित होने का पूर्ण संदेह था। यह सब अंततः शांतिपूर्ण ऑरेंज क्रांति में परिणत हुआ, युशचेंको और यूलिया युशचेंको को सत्ता में लाया, जबकि विपक्ष में यानुकोविच का चुनाव किया।

- डोनबास का युद्धः

वर्ष 2013 में यूक्रेन के यूरोपीय संघ–यूक्रेन एसोसिएशन समझौते पर हस्ताक्षर को निलंबित करने के निर्णयपर शुरू हुआ यूरोमैडन विरोध। इस समझौते के विरोध के पश्चात, यानुकोविच और यूक्रेनी संसदीय विपक्ष के नेताओं ने 21 फरवरी 2014 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें शीघ्र चुनाव की घोषणा की गई, उसके अगले ही दिन, यानुकोविच एक महाभियोग वोट से पहले कीव से भाग गए, जिससे उनकी राष्ट्रपति के रूप में सारी शक्तियों को छीन लिया गया। यूक्रेन के रूसी–भाषी पूर्वी क्षेत्रों के नेताओं ने यानुकोविच के प्रति अपनी निरंतर वफादारी की घोषणा की, जिसके कारण यूक्रेन में 2014 में रूस समर्थक अशांति हुई, और इस अशांति के पश्चात् मार्च 2014 में रूस द्वारा क्रीमिया पर अधिग्रहण कर लिया गया और डोनेट्स्क और लुहान्स्क पीपुल्स रिपब्लिक के रूस समर्थित अर्ध–राज्यों के निर्माण के साथ डोनबास में अप्रैल 2014 में युद्ध शुरू हुआ।

संघर्ष का कारणः

शीत युद्ध के पश्चात् के युग में गौरवपूर्ण रूसी अतीत को पुनर्जीवित करने की इच्छा और मध्य यूरोपीय क्षेत्रीयता को लेकर संघर्ष यूक्रेन संकट के मूल में स्थित है। 9 दिसंबर 2021 को, राष्ट्रपति पुतिन ने रूस के बाहर रूसी बोलने वालों के साथ हो रहे भेदभाव की बात करते हुए कहाः ''मुझे कहना होगा कि रूसोफोबिया नरसंहार की ओर प्रथम कदम है। आप और मैं जानते हैं कि डोनबास में क्या हो रहा है। यह निश्चित रूप से नरसंहार जैसा प्रतित होता है।'' 15 फरवरी 2022 को, प्रेस से पुतिन ने कहाः ''डोनबास में जो हो रहा है वह निश्चित नरसंहार है।'' सैकड़ों वर्षों से सांस्कृतिक, भाषाई और पारिवारिक संबंधों की साझेदारी रूस और यूक्रेन करते आ रहे हैं। रूस में और यूक्रेन के जातीय रूप से रूसी भागों में कई लोगों के लिये दोनों देशों की साझा विरासत एक भावनात्मक विषय है, जिसका चुनावी और सैन्य उद्देश्यों के लिये दोहन होता रहा है। यूक्रेन सोवियत संघ के एक भाग के रूप में रूस के पश्चात् दूसरा सबसे शक्तिशाली सोवियत गणराज्य था और आर्थिक, रणनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। यूक्रेन की सीमा पूर्व मे रूस से व पश्चिम में यूरोप से लगती ह। रूस व यूक्रेन के वर्तमान संघर्ष के प्रमुख कारणः–

1. क्षेत्रीय शक्ति संतुलन।
2. यूक्रेन का रूस एवं पश्चिम देशों के मध्य एक महत्त्वपूर्ण बफर क्षेत्र का होना।
3. यूक्रेन का नाटो की सदस्यता पाने का प्रयास।
4. और काला सागर क्षेत्र में रूस के हितों के साथ ही यूक्रेन में विरोध प्रदर्शन।

वर्तमान परिदृश्य, रूस का पक्ष एवं भारत पर इसका प्रभावः

रूस यूक्रेन युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् से यूरोप में एक देश के द्वारा दूसरे देश पर किया गया सबसे बड़ा आकमण है, साथ ही यह 1990 के दशक में हुए बाल्कन संघर्ष के पश्चात् पहला बड़ा संघर्ष है। मिंस्क प्रोटोकॉल–2014 (Minsk Protocol) और वर्ष 1997 के रूस–नाटो एक्ट यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के साथ ही लगभग निष्प्रभावी हो गए हैं। G–7 देशों द्वारा यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की निंदा की गई है, इस प्रतिक्रिया में अमेरिका, यूरोपीय संघ (EU), यू.के., ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और जापान द्वारा रूस पर अनेक आर्थिक एवं राजनैतिक प्रतिबंध भी लगाए गए हैं, परंतु चीन द्वारा यूक्रेन पर रूस की कार्रवाई को 'आक्रमण' कहना स्वीकार नहीं किया गया एवं सभी पक्षों से इस स्थिति मे संयम रखने का आग्रह किया। पश्चिमी शक्तियों द्वारा क्रीमिया में रूस के हस्तक्षेप की निंदा करन के विषय में भारत सम्मिलित नहीं हुआ, और रूस–यूक्रेन विषय पर किसी भी प्रकार की सार्वजनिक उद्धबोधन से भारत ने सतर्कता बरती।

वर्तमान विषय में अमेरिका द्वारा आयोजित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव में जहाँ पर रूस की यूक्रेन के विरुद्ध 'आक्रामकता' की 'कठोरतम शब्दों में निंदा' की गई, पर भारत ने इस मतदान में अनुपस्थित रहने का रास्ता चुना और इस अवसर पर भारत ने 'डायलॉग' और 'डिप्लोमेसी' जैसे शब्दों पर बल देते हुए कहा कि संवाद ही मतभेदों एवं विवादों को दूर करने का एकमात्र साधन है और भारत ने दुख जताया कि इस विषय में कूटनीति का मार्ग छोड़ दिया गया। भारत के अतिरिक्त इस मतदान में संयुक्त अरब अमीरात और चीन ने भी भाग नहीं लिया।

सुरक्षा हितों और पूर्व सोवियत गणराज्यों में रूसियों के अधिकारों की रक्षा करने के आधार पर रूसी राष्ट्रपति द्वारा यूक्रेन संकट को उचित ठहराया गया था। रूस का यह भी कहना है कि नाटो के विस्तार ने सोवियत संघ के विखंडन से पूर्व किये गए वायदों का उल्लंघन किया है, जिससे कि यूक्रेन का नाटो में सम्मिलित होना रूस के लिये संकट की स्थिति को पार कर जायेगा और नाटो की रणनीतिक मुद्रा रूस के लिये एक सतत् सुरक्षा संकट उत्पन्न करती है। वारसॉ संधि और सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् भी नाटो का एक राजनीतिक–सैन्य गठबंधन के रूप में विस्तार अमेरिकी पहल थी जिसका उद्देश्य रणनीतिक स्वायत्तता के लिये यूरोपीय महत्त्वाकांक्षाओं को नियंत्रण में रखना और रूस के पुनरुत्थान एवं रूस के बढते वर्चस्व का प्रतिर्स्पाधा करना है।

वर्तमान में यूक्रेन को नाटों में 'भागीदार देश' का स्थान प्राप्त है जिसका अर्थ है कि उसे भविष्य में इस सैन्य गठबंधन में सम्मिलित होने की अनुमति दी जाएगी। रूस पश्चिमी देशों से यह आश्वासन चाहता है कि, यूक्रेन को कभी भी नाटो में सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान नहीं की जायेगी। अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी देश यूक्रेन को नाटो से प्रतिबंधित करने से अस्वाकृत कर रहे हैं, उनका दावा यह है कि यूक्रेन एक संप्रभु देश है जो अपने स्वयं के सुरक्षा गठबंधनों को चुनने के लिये स्वतंत्र है।

रूस–यूक्रेन संकट के कारण भारतीय घरों और व्यवसायों के लिये उपयोग में लाई जाने वाली रसोई गैस, पेट्रोल एवं अन्य ईंधन खर्चों की कीमत बढ़ सकती है। तेल की बढती कीमतों के कारण परिवहन लागत में भी वृद्धि होगी जिससे महंगाई दर में वृद्धि होने की संभावना है। वैश्विक स्तर पर तेल की कीमत अधिक समय तक ऊँची बने रहने की स्थिति में उत्पन्न तनाव मुद्रास्फीति अनुमानों के संबंध में RBI की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठ सकता है, जबकि इससे सरकार की बजट गणना, विशेष रूप से राजकोषीय घाटा भी प्रभावित होने की संभावना हैं।

कच्चे तेल की कीमतों में बढोतरी के कारण भारत के तेल आयात बिलों में वृद्धि होगी और रुपए के दबाव में रहने से सोने का आयात पुनः बढ़ सकता है। रूस से भारत के पेट्रोलियम

उत्पादों का आयात करके इसकी भरपाई की जा सकती है, किंतु उर्वरकों और सूरजमुखी के तेल के वैकल्पिक स्रोतों को खोज सरल नहीं होगा। भारत द्वारा रूस को निर्यात अपने कुल निर्यात का 01 प्रतिशत से भी कम है, परंतु फार्मास्यूटिक्स एवं चाय के निर्यात को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जबकि CIS देशों को शिपमेंट में भी कुछ कठिनाई आएगी।

विश्व अभी भी कोविड–19 महामारी से जूझ रहा है इस महामारी ने विकसित एव विकासशील सभी देशों को प्रभावित किया है और वे इस महामारी से हुए हानि से उभर नही पाये है। ऐसे में विश्व एक और युद्ध के फलरूवरूप उत्पन्न मंदी का सामना करने में असमर्थ ही होगा। तत्काल युद्धविराम अति–आवश्यक है अन्यथा लंबे समय तक चलने वाले संघर्ष की लागत एवं परिणाम बहुत गंभीर हो सकते है जो कि अभी ही यूक्रेन में जीवन के प्रत्येक स्तर पर हानि और पीड़ा के रूप में प्रकट होने लगे है। यह दायित्व रूस और यूक्रेन दोनों पर है कि वह तत्काल युद्ध विराम कर दोनों पक्ष वार्ता से समस्या का सर्वसम्मत हल निकाले। इस संघर्ष को आगे बढ़ाना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। पश्चिम (अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों) को दोनों पक्षों को वार्तालाप फिर से शुरू करने और सीमा पर सापेक्ष शांति बहाली के लिये मिंस्क समझौत के अनुरूप अपनी प्रतिबद्धताओं की पूर्ति करने के लिये प्रेरित करना चाहिये। अंतर्राष्ट्रीय कानून के उल्लंघन की निंदा करने के लिये एक रणनीतिक साझेदार की ओर से दबाव और दूसरे साझेदार की वैध चिंताओं को समझने के मध्य एक संतुलन स्थापित करना होगा। सभी पक्षकारों क लिये सर्वोत्तम पथ यही है कि वे एक कदम पीछे हटें और युद्ध की संभावना को समाप्त करने पर ध्यान केंद्रित करें, बजाय इसके कि विश्व में पुनः विभाजन उत्पन्न हो विश्व दो या अधिक गुटों में विभाजित हो गए और एक बार पुनः शीत युद्ध की स्थिति बने।

संदर्भ सूचीः

1. Lister, Tim; Kesa, Julia (24 February 2022). "Ukraine says it was attacked through Russian, Belarus and Crimea borders". CNN. Kyiv.
2. Barnes, Julian E.; Crowley, Michael; Schmitt, Eric (10 January 2022). "Russia Positioning Helicopters, in Possible Sign of Ukraine Plans". The New York Times.
3. AFP. "Ukraine says more than 40 of its soldiers, 10 civilians killed". www.timesofisrael.com अभिगमन तिथि 2022-02-26.
4. "Russia's invasion of Ukraine". The Economist. 26 February 2022. मूल से 26 February 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 February 2022.
5. "Russia attacks Ukraine". CNN. 24 February 2022. मूल से 24 February 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 February 2022.
6. "Why is Russia invading Ukraine and what does Putin want?". BBC News. 24 February 2022.
7. Morin, Rebecca (24 February 2022). "World leaders condemn Russian invasion of Ukraine; EU promises 'harshest' sanctions – live updates". USA Today 24 February 2022.
8. www.google.com
9. www.wikipedia.com
10. www.zeebiz.com
11. Stewart, Briar (24 February 2022). "More than 1,700 people detained in widespread Russian protests against Ukraine invasion". CBC News 24 February 2022.
12. "Istanbul Document 1999". Organization for Security and Co-operation in Europe. 19 November 1999.
13. "Yushchenko: 'Live And Carry On'". CBS News. 30 January 2005. मूल से 25 October 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 April 2020.
14. "Study: Dioxin that poisoned Yushchenko made in lab". Kyiv Post. London. 5 August 2009. मूल से 31 January 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 January 2022.
15. "Yushchenko to Russia: Hand over witnesses". Kyiv Post. 28 October 2009.

♦ ♦ ♦ ♦ ♦

2

रूस की पुनः सोवियतीकरण की नीतिः कज़ाख़िस्तान के सन्दर्भ में

चित्रा राजौरा

शोधार्थी

क्ज़ाख़िस्तान अन्य चार मध्य एशिया देशो (तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तान) में भौगोलिक और आर्थिक रूप से सम्पन्न देश है। जिसकी सीमा उत्तर–पश्चिम और उत्तर में रूस, पूर्व में चीन और दक्षिण में किर्गिस्तान, उज्बेकिस्तान, अरल सागर और तुर्कमेनिस्तान से सटी हुई है वही कैस्पियन सागर कजाकिस्तान को दक्षिण–पश्चिम में जोड़ता है। कजाकिस्तान मध्य एशिया का सबसे बड़ा व विश्व का नौवां सबसे बड़ा देश है। कजाखस्तान की सकल घरेलू उत्पाद सालाना 3.5 दर की है। कजाखस्तान के पास कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। फिर भी, आज कज़ाख़िस्तान में तेल और गैस की कीमत को बढ़ाये जाने से लोगों में सरकार के विरूद्ध प्रदर्शन तथा राजनितिक और आर्थिक उथल–पुथल चल रही है। जिसका प्रभाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पड़ सकता है। कज़ाख़िस्तान सरकार को भविष्य में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इस आधार पर, यह देखना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कज़ाख़िस्तान में चल रही अस्थिर परिस्थितियों का उसके आंतरिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ेगा? नूरसुल्तान नजरबयेव की "राष्ट्र नेता" की छवि किस प्रकार खत्म होती जा रही है? साथ ही यह भी विश्लेषण करना होगा की राजनितिक अस्थिरता से इस्लामवादियों की पूरे मध्य एशिया में किस हद तक सक्रिय होने की सम्भवना बढ़ जाएगी? क्योकि कज़ाख़िस्तान अपने राजनीतिक वास्तविकता के एक नए चरण में आ चुका हैं। तथा पुराने सोवियत–युग के नेताओं को नई पीढ़ी द्वारा अस्वीकृत किया जा सकता है। जो स्वतंत्रता के अर्तगत और अधिक इस्लाम–प्रभावित वातावरण में पली–बढ़ी भी है। इस प्रकार, कज़ाख़िस्तान में अस्थिरता के कारण इस्लामी आंतकवाद के पनपने का संकट बड़ जाने की सम्भवना हो जाती है। अंतः कज़ाख़िस्तान की अस्थिरता विश्व के लिए क्या महत्व रखती है?

यह पूर्व ज्ञात है की सोवियत संघ के पतन के पश्चात् से कजाकिस्तान अधिकतर स्थिर एंव निरंकुश देश रहा है। तथा कज़ाख़स्तान को प्रबंधित सत्तावादी शासन की प्रणाली को स्थिरता और लोकतंत्र के मध्य संतुलन के रूप में वर्णित किया। तथापि, कजाखस्तान यूरोपीय राज्यों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण है। और कुछ हद तक एशिया के लिए। क्योंकि राजनीतिक स्थिरता ने इसे तेल, प्राकृतिक गैस और कोयले का एक प्रमुख निर्यातक बनने में सक्षम बनाया है। कजाकिस्तान अपने पड़ोसी संसाधन संपन्न मध्य एशियाई राज्यों के लिए भी एक महत्वपूर्ण

ऊर्जा पारगमन देश भी है। तेंगिज तेल क्षेत्र के श्रमिकों तक विरोध प्रदर्शन पहले ही पहुंच चुके हैं, तथापि उत्पादन अभी तक प्रभावित नहीं हुआ है। यदि ये विरोध ऊर्जा उत्पादन या पारगमन को बाधित करने के लिए पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं तो वे कजाकिस्तान के राजनीतिक महत्व के अनुपात में आर्थिक प्रभाव पर भी दस्तक दे सकते हैं।

अपनी स्वतंत्रता के पश्चात् से, सोवियत परिवर्तन के बाद की कुछ सफलता की कहानियों में से एक कजाकिस्तान रहा है। तेल, गैस, तांबा, कोयला और यूरेनियम सहित प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध, और विश्व में सबसे कम जनसंख्या घनत्व के साथ, यह अपने पूर्व सोवियत संरक्षक के बिना फलने–फूलने के लिए अच्छी तरह से रखा गया था। तथापि, 1990 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् मध्य एशिया देशो ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, और संस्कृति सम्बन्धो की शुरुआत की थी। 1990 के दशक के दौरान, नजरबायेव का मुख्य नारा "अर्थव्यवस्था पहले" था। उन्होंने संसद पर हावी होने के लिए अपने राजनीतिक नियंत्रण को मजबूत करते हुए निजी उद्यमों को विकसित होने दिया। नजरबायेव, जो 81 वर्ष के हैं। जिन्होंने 1989 से कजाकिस्तान पर शासन किया था। 1991 के राष्ट्रपति चुनाव में 98 प्रतिशत से मत से विजय प्राप्त की। लेकिन पुनः 2015 के चुनावो में 98 प्रतिशत वोटो से विजय प्राप्त कर यह सिद्ध किया की कज़ाख़िस्तान में राष्ट्रपति की छवि एक प्रभुत्तावादी जैसे बन चुकी है। इसी प्रकार, कजाखस्तान में राजनितिक सत्ता का केंद्र न्रसुल्तान नजरबायेव के हाथो में 2019 तक रहा था 2019 में राष्ट्रपति दवारा अपनी सत्ता का पदभार अपने उत्तराधिकारी जोमार्ट टोकायेव को दिया। नजरबायेव ने पश्चात् में सुरक्षा परिषद के प्रमुख के रूप में पदभार संभाला और यह स्पष्ट हो गया कि पुराना शासक अपनी शक्ति को त्यागने के लिए उत्सुक नहीं था। सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष और "राष्ट्र के नेता" के रूप में देश पर नियंत्रण बनाए रखा हैं, एक ऐसा शीर्षक जो उन्हें अद्वितीय नीति निर्धारण विशेषाधिकारों के साथ–साथ अभियोजन से प्रतिरक्षा प्रदान करता है। देश में हर कोई समझता है कि टोकायव सिर्फ एक नामांकित व्यक्ति है और उसके पास देश के भीतर कोई राजनीतिक शक्ति और प्रभाव नहीं है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों के कारण टोकायेव द्वारा (राष्ट्रिय सुरक्षा कौंसिल) सत्ता को अपने हाथो में ले लिया है साथ ही, प्रमुख नेताओ को अपने पद से हटा कर सम्पूर्ण सत्ता अपने पक्ष में कर ली है।

तथापि, एक लोकतान्त्रिक देश के लिए वैधता का होना महत्वपूर्ण होता है जो वहॉ की जनता को अपने राजनितिक अधिकारों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने का वातावरण प्रदान करती है। परन्तु लोकतान्त्रिक वैधता की यह छवि कजाखस्तान में विपरीत रूप से बनी हुए है। इस बीच, सरकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों में कटौती कर रही है। पत्रकारों और राजनीतिक विरोधियों को खामोश या जेल में डाला जा रहा है। जबकि सरकार ने अपने

आलोचकों के खिलाफ कई अभियान चलाया, मनमाने ढंग से हिरासत का सहारा लिया साथ ही देश छोड़ने वालों का पीछा करने के लिए इंटरपोल का प्रयोग किया। इसी प्रकार की गतिविधियां कजाकिस्तान में विशेष रूप से 2016 और 2019 में देखी गई।

इस पर विश्लेषकों का कहना है विशेष रूप से नेताविहीन प्रदर्शनकारी नजरबायेव के शासन को समाप्त करने के लिए दृढ़ हैं। क्योंकि ईंधन की कीमतें एक उत्प्रेरक थी जिसने भ्रष्टाचार, राजनीतिक पसंद की कमी और नागरिक स्वतंत्रता से ग्रस्त देश में लंबे समय से चली आ रही शिकायतों पर बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन शुरू किया गया। और जहां आम लोग संघर्ष करते रहे हैं। मारियस फॉसम ने कहा, (अल्माटी में स्थित नॉर्वेजियन हेलसिंकी समिति का एक क्षेत्रीय प्रतिनिधि है) का मानना है की अधिकार समूहों ने वर्षों से इस प्रकार के विकास के विरूद्ध चेतावनी दी है। यह संकट आंशिक रूप से जनसंख्या के साथ पर्याप्त रूप से जुड़ने और लोगों की वैध शिकायतों को सुनने और संबोधित करने में शासन की निरंतर विफलता के कारण है। इसके विपरीत, शासन ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण सभा की स्वतंत्रता को दबा दिया है जिससे देश में एक प्रकार की प्रेशर कुकर की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

वर्तमान परिस्थिति

कज़ाख़िस्तान की घटनाएं बहुआयामी है इसका विश्लेषण तीन व्यापक घटनाओ से कर सकते है पहला कज़ाख़िस्तान के लम्बे समय के नेता नूरसुल्तान नजरबायेव के अंर्तगत तीन दशकों के भ्रष्टाचार और अप्रभावी शासन के विरूद्ध वैध सरकार विरोधी विरोध दूसरा बलात् राज्य परिवर्तन का प्रयास तीसराय कजाकिस्तान की वाणिज्यिक राजधानी अल्माटी की सड़कों पर अच्छी तरह से प्रशिक्षित सैनिकों के नेतृत्व में एक सशस्त्र विद्रोह। 2 जनवरी 2022 को ईंधन की कीमतों पर एक छोटे से प्रदर्शन ने एक राष्टव्यापी विरोध आंदोलन शुरू हुआ. जिसने तीन दशकों के शासन के विरूद्ध हंगमा और ओल्ड मैन आउट के नारे लगाए गए. इसकी वजह सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग और उसके सहयोगियों के हितो की सेवा करना था जो अभी भी कजाखस्तान की अधिकाशं राजनितिक अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण रखते है. जो पूर्व सोवियत गणराज्य में जन असंतोष का एक दुर्लभ प्रदर्शन बड़े शहर अल्माटी में हजारों लोगों के अभूतपूर्व मार्च को तोड़ने के प्रयास में आंसू गैस के गोले दागे और हथगोले दागे। इस झड़प में लगभग 164 लोग मारे गए जिसमे 18 सुरक्षा कर्मचारी थे। 12000 लोग हिरासत में लिए गए। इस रिपोर्ट से पता चलता है की व्यापक मानवाधिकारों का हनन हुआ है.

यदि हम इतिहास में देखे तो कजाखस्तान में ऐसे कई आंदोलन और विरोध प्रदर्शन हुए लेकिन नूरसुल्तान नजरबायेव के आदेश से उन आंदोलन और हड़ताल को दबा दिया गया है। जैसे

2019 में अलमाटी में चुनाव प्रक्रिया के विरूद्ध बड़ा प्रदर्शन हुआ था। लगभग 500 लोगों को गिरफ्तार किया गया और कई पत्रकारों को भी हिरासत में लिया गया जो विरोध प्रदर्शन को कवर कर रहे थे। फेसबुक और टेलीग्राम जैसे सभी सोशल मीडिया नेटवर्क को प्रतिबंधित कर दिया गया है। तुलनात्मकरूप से 5,000 से अधिक प्रदर्शनकारीयों का यह प्रदर्शन तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) पर मूल्य सीमा को हटाने से तेल समृद्ध पश्चिमी मैंगिस्टाऊ क्षेत्र के झानाओजेन शहर में सप्ताहांत के दौरान शुरू होकर कई कस्बों और शहरों में फैल गया हैं, जिसमें देश के कैस्पियन सागर तट पर अकटाऊ के क्षेत्रीय केंद्र के साथ–साथ कजाकिस्तान के सबसे बड़े तेल उत्पादक, टेंगिजचेवरोइल के उपमहाद्वीपों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक कार्यकर्ता शिविर भी सम्मिलित है। विरोध प्रदर्शन में कथित तौर पर हजारों लोग शामिल हैं। अनेक विश्लेषकों का कहना है की "यह कहानी गैस की कीमत के बारे में नहीं है। यह कहानी शक्ति के बारे में है। यह असमानता के बारे में है, और यह राजनीतिक पसंद की कमी के बारे में है।"

परिणामस्वरूप, राष्ट्रपति टोकायेव दवारा देश में शांति और स्थिरता लाने के लिए घोषणा कि नजरबायेव सुरक्षा परिषद के प्रमुख के रूप में पद छोड़ देंगे, टोकायव ने विरोध को भड़काने के लिए "आर्थिक रूप से प्रेरित षड्यंत्रकारियों" को दोषी ठहराया है। तोकायेव ने बुधवार को कहा, "देश के भीतर और बाहर से उकसावे के आगे न झुकें। नागरिक और सैन्य सुविधाओं पर आकमण करने के लिए उकसाना गैरकानूनी है। यह एक ऐसा अपराध है जिसकी सजा मिलेगी। अधिकारी नहीं गिरेंगे और हमें संघर्ष की जरूरत नहीं है अपितु आपसी विश्वास और संवाद की आवश्यकता है।"

रूस का हित तथा सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (CSTO) की कार्यवाही

सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (सीएसटीओ) पूर्व सोवियत राज्यों का रूसी नेतृत्व वाला गठबंधन है। रूस बेलारूसय ताजिकिस्तानय आर्मेनियाय किर्गिस्तान और कजाखस्तान, 5 जनवरी को, टोकायव ने सीएसटीओ संधि के अनुच्छेद 4 को लागू किया, जिसके अनुसार यदि एक सदस्य को बाहरी बल द्वारा आक्रामकता के अधीन किया जाता है। तो इसे सभी सदस्य राज्यों के विरूद्ध आक्रामकता माना जाता है। गठबंधन के सदस्य "आक्रामक" देश को सैन्य सहायता और रक्षा प्रदान करते हैं। यह पहली बार है जब संगठन के इतिहास में सीएसटीओ सैनिकों को तैनात किया गया है। CSTO पीसकीपिंग फोर्स में कुल 3,600 लोग हैं। सीएसटीओ के महासचिव, स्टानिस्लाव जास ने आरआईए समाचार एजेंसी को बताया कि कजाखस्तान को भेजे जाने वाले शांति सेना की संख्या 2,500 होगी। तथापि संख्या भिन्न हो सकती है। सेंट्रल एशियन ब्यूरो फॉर एनालिटिकल रिपोर्टिंग (CABAR) के अनुसार 2020 तक CSTO संख्या

26,600 की सामूहिक सुरक्षा प्रणाली है। सीएसटीओ में रूस का योगदान 2015 में संगठन के कुल बजट का 50 प्रतिशत था, अन्य पांच राज्यों ने बजट में 10 प्रतिशत का योगदान दिया था।

बाद में बुधवार को, टोकायेव ने कहा कि उन्होंने सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (सीएसटीओ) से सहायता मांगी थी। जो मॉस्को समर्थित सुरक्षा गठबंधन है, जो कि "आतंकवादियों" के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शनों को रोकने में सहायता के लिए था। "आज मैंने सीएसटीओ राज्यों के प्रमुखों से इस आतंकवादी संकट पर काबू पाने में कजाकिस्तान की सहायता करने की अपील की," उन्होंने सुरक्षा बलों को प्रदर्शनकारियों के विरूद्ध "घातक बल के साथ गोलियां चलानेष का आदेश दिया है जिसे वह "आतंकवादी" बताते हैं। इस संदेह में, कजाखस्तान के पूर्व खुफिया प्रमुख को देशव्यापी सरकार विरोधी प्रदर्शनों के पश्चात् देशद्राह के संदेह में गिरफ्तार किया गया है। करीम मासीमोव की नजरबंदी की घोषणा राष्ट्रीय सुरक्षा समिति द्वारा की गई।

अतः कई देशो ने इस कार्यवाही पर अलग– अलग प्रतिक्रिया व्यक्त की किंतु वास्तविक प्रश्न यह है कि मास्को और बीजिंग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। मॉस्को इसका प्रयोग उत्तरी कजाखस्तान को वापस लेने के बहाने के रूप में कर सकता है, जो देश के अधिकांश हाइड्रोकार्बन और एक बड़ी जातीय रूसी जनसंख्या का घर है। अन्य यह भी परिणाम निकाला जा सकता है। तथापि, कजाखस्तान में रूस के मजबूत हित हैं, इसके बैकोनूर कोस्मोड्रोम स्पेसपोर्ट से लेकर इस तथ्य तक कि रूस अपर्याप्त रूसी उत्पादन के लिए बैकस्टॉप के रूप में कजाख गैस पर निर्भर करता है। कजाख स्थिरता में चीन की कम किंतु अभी भी महत्वपूर्ण रुचि हैय देश चीनी प्राकृतिक गैस आयात का कम से कम 5 प्रतिशत आपूर्ति करता है। हमें सीएसटीओ और शंघाई सहयोग संगठन, जिसके तीनों देश सदस्य हैं, दोनों से इस संकट को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाने की उम्मीद करनी चाहिए।

अमेरिका का विश्लेषण

इसी प्रकार, अमेरिका के एक विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय के प्रवक्ता ने कहा "हम हाल के दिनों में कज़ाख़िस्तान में हुई हिंसक झड़पों से चिंतित हैं हम इंटरनेट सेवाओं को फिर से शुरू करने और कज़ाख़ अधिकारियों से भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति उनकी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करने का भी आह्वान करते हैं।" हालाँकि अमेरिकी सरकार के पास इस संकट में हस्तक्षेप करने की सीमित क्षमता है संयुक्त राज्य अमेरिका का कज़ाख़स्तान में बहुत कम प्रभाव है और इस समय वहां उसका कोई राजदूत भी नहीं है। इसके अतिरिक्त, इस प्रकार की स्थिति (प्रतिबंध) में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा सामान्य रूप से उपयोग किए जाने वाले कई उपकरण कजाख मामले के लिए खराब रूप से अनुकूल हैं व प्रमुख अमेरिकी

ऊर्जा कंपनियां कजाख अर्थव्यवस्था में गहराई से एकीकृत हैं। और इन उद्योगों पर प्रतिबंधों से उत्पादन में कमी आएगी जो अमेरिका के यूरोपीय सहयोगियों को प्रभावित कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, इस धारणा के प्रति रूसी संवेदनशीलता को देखते हुए कि संयुक्त राज्य अमेरिका इस क्षेत्र में तथाकथित रंग क्रांतियों का समर्थन करता है, कज़ाख़ प्रदर्शनकारियों के लिए समर्थन मॉस्को के साथ तनाव बढ़ाने के लिए उत्तरदायी है, जो वर्तमान परिवेश में एक अनुपयोगी कदम है। यहां अमेरिकी सरकार के लिए सबसे अच्छा माध्यम व्यावहारिक होने की संभावना है, कम से कम जब तक अस्थिर स्थिति के बारे में अधिक जानकारी न हो। इसी सन्दर्भ में, अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन का कहना है कि कज़ाख़स्तान अब एक भू–राजनीतिक नाटक का केंद्र है रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस स्थिति का उपयोग अपने कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप से लागू करने के लिए सोवियत संघ जैसी संरचना का पुनरू निर्माण करने के लिए कर रहे हैं। तो यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें किसी बाहरी सहायता की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? इसलिए हम इसके बारे में अधिक जानने की कोशिश कर रहे हैं।

इन सब परिवर्तित परिस्थितियों से भविष्य का कोई अंदाजा नहीं लगया जा सकता है। यह जानना अति महत्वपूर्ण होगा की कजाख राष्ट्रपति टोकायेव द्वारा राजनीतिक स्थिरता और शांति के बहाल के लिए क्या कदम उठाये जायगे? अन्य विश्लेषण यह भी होगा की क्या यह सब कजाखस्तान में लोकतंत्र की और अग्रसर होने का सफल कदम होगा ? या कजाखस्तान केवल तेल और गैस का कूटनीति का गढ़ बन कर रहे जाएगा ?

♦♦♦♦♦

3

रूस–यूक्रेन संघर्षः एक कूटनीतिक परिप्रेक्ष्य

सौरभ प्रताप सिंह

स्नातक छात्र, गुरु गोबिन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली

रूस और यूक्रेन के मध्य चल रहे भीषण युद्ध में एक तरफ मानवता अंतिम श्वास ले रही है, वही दूसरी ओर विभिन्न राष्ट्रों के माध्यम से अपने– अपने स्वार्थ को अप्रत्यक्ष रूप से इस महाविपदा को बढ़ावा दिया जा रहे है। सन् 1991 में सोवियत संघ के विघटन के फलस्वरूप विभिन्न नवनिर्मित राष्ट्रों का जन्म हुआ, जिसमे यूक्रेन भी शामिल था। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, पड़ोसी देश यूक्रेन को भविष्य में खतरे के रूप में देखते है। उन्हें लगता है कि यूक्रेन शीघ्र ही नाटो (नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन) का सदस्य बन, अमरीकी सेना को रूस की सीमा निकट तैनाती करेगा ।

यह युद्ध पुनः संयुक्त राष्ट्र की योग्यता, प्रतिष्ठा एवं प्रासंगिकता पर गहन प्रश्न प्रस्तुत करता है। वर्तमान रूस–यूक्रेन युद्ध भी इस कथन को सिद्ध करता है। विश्व में मानवीय मूल्यों की रक्षा एवं असहाय राष्ट्रों की सुरक्षा हेतु, समय की मांग है कि वर्तमान संयक्त राष्ट्र को शीघ्र रूपांतरण कर उसे वह महत्वपूर्ण शक्तियाँ एवं सक्षम प्रतिनिधि मंडल प्रदान करना होगा, जिनसे वह दुनिया में स्वतंत्र रूप से शांति व्यवस्थता एवं न्याय को स्थापित कर सके, न कि मात्र मूकदर्शक बन अपने सामने विश्व को उजड़ता देखे। अपितु, यह भी सत्य है कि संयुक्त राष्ट्र के पाँच स्थाई सदस्य जो विश्व में स्वयं को शांति, लोकतंत्र एवं मानवीय मूल्यों का रक्षक कहते है, वो स्वयं इस भीषण युद्ध को रोकने में असफल सिद्ध हुए। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि, विकसित देश प्रायः विश्व में हो रहे युद्ध में अपने लाभ के लिये हरसंभव प्रयास करते है। यह देश सैन्य उपकरण के विकय से लाभ कमाते है, अतः युद्ध कि अवधि बढ़ाने का पूर्ण प्रयास करते है। रूस–यूक्रेन युद्ध में भी अनेक विकसित देश यूक्रेन को विभिन्न प्रकार के सैन्य अपकरण और आर्थिक ऋण देकर, स्वयं को महान बताने के साथ–साथ अपने राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को बढ़ावा दे रहे है।

इस युद्ध ने भारत को भी गहन धर्मसंकट मे डाल रखा है। एक तरफ रूस है, जिसने सन् 1971 के भारत – पाकिस्तान युद्ध में, भारत की मदद करने के लिए अमेरिका के विरुद्ध सैन्य कार्यवाही कर, भारत को इस महत्वपूर्ण युद्ध में विजय प्राप्त कीं। परंतु भारत, यूक्रेन से भी मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित रखना चाहता है। कूटनीतिक दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि भारत ने निष्पक्षता के साथ दोनों देशों से अपील कर वार्तालाप द्वारा आपसी मतभेद सुलझाने पर जोर दिया है ।

इसके अतिरिक्त यूक्रेन को महत्वपूर्ण मानवीय सहायता जैसे–दवाई, खाद्य सामग्री, तिरपाल आदि भेजकर उन देशों को करारा उत्तर दिया है, जो भारत की पक्षपात नीति पर प्रश्न उठा रहे थे। युद्ध चाहे विश्व के किसी भी भाग में हो रहा हो, परंतु उससे उत्पन्न होने वाली विभीषिका आम जन के अमूल्य जीवन को नष्ट करने में संकोच नहीं करती है। इस युद्ध में भी अब तक लगभग 30 लाख लोग यूक्रेन छोड़ पड़ोसी देशों में शरण लेने के लिए विवश है और असंख्य लोग बेघर है ।

विश्व के लगभग सभी देश इस भयावक रूस–यूक्रेन युद्ध की कड़ी निंदा करते नजर आ रहे है। परंतु, हम अतीत में विकसित देशों द्वारा, विशेष रूप से अमेरिकी युद्धों में मारे गए निर्दोष सामान्य नागरिकों की उपेक्षा क्यों करते हैं? इराक, अफगानिस्तान, यमन, सीरिया, सोमालिया आदि देशों में भीषण अमेरिकी युद्धों ने उन देशों पर जबरदस्त मानवीय प्रभाव डाला है। अनुमानित 3.8 लाख से भी अधिक सामान्य नागरिकों की परिणामस्वरूप मार्मिक मौतें हुई है। अंतः, हम कैसे भूल सकते है सन् 1945 में अमेरिका द्वारा जापान में गिराय गए विनाशकारी परमाणु हथियार, जिसने प्रत्यक्ष रूप से दो लाख से भी अधिक निर्दोष लोगों का जीवन सदा के लिए चंद मिनटों में छीन लिया। क्यां उस समय अमेरिका के विरुद्ध अन्य देशों ने आवाज बुलंद नहीं की, क्यों जवाबदेही तय नहीं की गयी, क्यों आर्थिक प्रतिबंधो का प्रयोग नहीं किया गया? यदि भविष्य में इसी प्रकार युद्ध में पक्षपात चलता रहा, तो अवश्य ही मानव जाति सम्पूर्ण विनाश की ओर तीव्र गति से प्रस्थान कर रही है।

इस युद्ध ने आत्मनिर्भरता की महत्ता को सही रूप में हमारे समक्ष प्रकट किया है । कोई भी राष्ट्र मात्र विदेशी तागतों के माध्यम से सर्वदा और सर्वत्र स्वयं को सुरक्षित रखने में असमर्थ है। आज भले ही, रूस युद्ध के अनुमानित परिणामों से दूर है परंतु अपनी सैन्य एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण दूसरे देशों से सहायता ना मिलने पर भी रूस पूर्ण रूप से युद्ध में सुदृढता से खड़ा है। वही दूसरी ओर, यूक्रेन को निरन्तर आर्थिक सहायता एवं सैन्य उपकरणों की आवश्यकता है। यदि यूक्रेन को ये सहायता मिलना बंद हो जाये, तो युद्ध में उसकी हार समीप है ।

हमे इस युद्ध को व्यापक दृष्टि से देखना चाहिए। युद्ध अपने साथ अनगिनत मुसीबतों को संग लाता है, जिनसे मात्र युद्ध ग्रस्त देश ही नहीं, अपितु लगभग सम्पूर्ण विश्व पर नकारात्मक प्रभाव पढ़ता है। रूस और यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में मात्र दो विरोधी देशों का हो हानि नहीं हो रहा, परंतु वैश्विक स्तर पर अनाज के दामों में तीव्र वृद्धि, आसमान छूती महँगाई दर, बढ़ती बेरोजगारी दर, खाद्य तेल विशेषकर सूरजमुखी तेल की कमी, उर्वरक की बढ़ते दाम, कच्चे तेल (पेट्रोल,

डीजल) का पुनः महँगा होना आदि समस्या होने के कारण सामान्य लोगों का जीवन व्यथित हो रहा है।

संदर्भ सूचीः

1. https://www.statista.com/statistics/269729/documented-civilian-deaths-in-iraq-war-since-2003/
2. https://www.iwm.org.uk/history/the-atomic-bombs-that-ended-the-second-world-war

♦ ♦ ♦ ♦ ♦

4

रूस–यूक्रेन युद्ध एवं परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय अवधारणा

गरिमा शर्मा

अभ्यागत शोधकर्ता,

तेलाविव विश्वविद्यालय, इजराइल

शीत युद्ध के अंत के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अस्मिता, सभ्यता एवं अर्थव्यवस्था जैसे विषयों के संचालन को मुख्य मानने वाले विशेषज्ञों के लिए रुस एवं यूक्रेन के मध्य युद्ध का आरम्भ होना एक आश्चर्य का विषय बन गया है। इस युद्ध ने मात्र यूरोप में ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में एक नई भू –राजनीति का उद्भव किया है। कुछ विशेषज्ञ इस युद्ध को द्वितीय शीत युद्ध के रूप में अवलोकित करने का प्रयास कर रहे है। इस युद्ध में रूस एवं अमेरिका के मध्य विचारधारा एवं विस्तारीकरण की नीति को लेकर चलने वाले आरोप–प्रत्यारोप का चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। वास्तविकता में इस चित्रण का एक अन्य पक्ष भी है जो यूक्रेन एवं रूस के मध्य के संबंधों को प्रस्तुत करता है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् निर्मित हुए यूक्रेन राज्य को रूस के साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों के कारण सह संबधित अवलोकित किया जा सकता है।

रूस के पश्चात् यूक्रेन सोवियत संघ से विघटित हुए राज्यों में सबसे शक्तिशाली राज्य है तथा इस कारण यह आर्थिक एवं भू राजनीतिक कारणों से रूस के लिए भी महत्वपूर्ण ह। वही अमेरिका एवं पश्चिमी राज्य भी यूक्रेन को रूस के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच के रूप में देखते है। पूर्व एवं पश्चिम के मध्य होने वाले द्वेष को 2013 से रूस एवं यूक्रेन में बढ़ते तनाव के द्वारा अनुभव किया जाने लगा था, जब रूस समर्थक यूक्रेन के राष्ट्रपति विक्टर द्वारा यूरोपियन य्नियन की अपेक्षा रूस समर्थित यूरेशिया इकनोमिक यूनियन में सम्मिलित होने का निर्णय लिया गया। इस निर्णय के कारण यूक्रेन की जनता द्वारा राष्ट्रपति विक्टर का विरोध किया गया तथा अंततः उन्हें 2014 में अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप रूस द्वारा यूक्रेन के भाग क्रीमिया पर अतिक्रमण तथा साथ ही पूर्वी यूक्रेन के अंतर्गत निवासित रुसी नृजातीय लोगों को समर्थन प्रदान करके अलगाववादी आंदोलनों को बढ़ावा देना आरम्भ कर दिया गया। ऐसे में यूरोपियन यूनियन तथा अमेरिका द्वारा एक ओर यूक्रेन की संप्रभुता को संरक्षण प्रदान करने का चित्रण प्रस्तुत किया जाने लगा तथा दूसरी ओर यूक्रेन द्वारा भी अमेरिका समर्थित नाटो संगठन के अंतर्गत सम्मिलित होने की प्रक्रिया को आरम्भ कर दिया गया। वास्तविकता में स्थिति युद्ध तक आ जाएगी इसकी कल्पना अमेरिका तथा यूरोपियन संघ दोनों

ही द्वारा नहीं की गयी थी। युद्ध की स्थिति में आज यूक्रेन संसाधन एवं जनसँख्या में रूस से कम होने के पश्चात भी रुसी हमले का सामना कर रहा है। अमेरिका द्वारा ऐसे मात्र कुछ सांकेतिक प्रतिबंध लगा देने से उस विनाश एवं विस्थापन को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, जिसका अनुभव यूक्रेन की जनता प्रतिदिन कर रही है। इस युद्ध ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध जगत में भी पुनः उन अवधारणाओं को जागृत कर दिया है जिनके बारे में यह अनुमान लगा दिया गया था कि बढ़ते वैश्वीकरण में सभी राज्य एक दूसरे पर आर्थिक स्तर से निर्भर हो गये है तथा ऐसे में आर्थिक एवं वैचारिक संघर्ष हो सकते है परन्तु युद्ध जैसी स्थिति की संभावना कम ही रहेगी। इस परिवर्तित अवधारणा को ही इस लेख के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

युद्ध के परिदृश्य में कौटिल्य की विदेश नीति को ध्यान रखना आवश्यक हो गया है कि हमारा पड़ोसी राज्य, हमारा मित्र होने की अपेक्षा अधिकतर शत्रु ही होता है। वर्तमान समय में ऐसे कम ही राज्य होंगे जिनका अपने पड़ोसी राज्यों के साथ सीमा या संसाधनों को लेकर विवाद न हो। भारत के सन्दर्भ में पाकिस्तान एवं चीन दो प्रमुख उदाहरण है। वर्तमान समय में यह विवाद मात्र सीमा या संसाधनों को लेकर नहीं वरन संप्रभुता को लेकर भी हो गया है। ऐसे में सीमा के स्तर पर अपने आप को सशक्त करने का उचित समय हो गया है। विशेषकर उन राज्यों के लिए यह विषय अधिक चिंता का है जहाँ सीमा शिथिल स्थिति में होती है। मित्र एवं शत्रु राज्य की सीमा के साथ अनेक विशेषज्ञ माइकल डोल द्वारा प्रस्तुत किया गया 'शांति सिद्धांत' का तर्क देते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास रहे है कि रूस एक लोकतांत्रिक राज्य नहीं है इसी कारण वह वर्तमान समय में युद्ध एवं अतिक्रमण जैसी नीतियों का प्रयोग कर रहा है। युद्ध से पूर्व अमेरिका द्वारा आयोजित विश्व लोकतांत्रिक सम्मेलन के अंतर्गत रूस को निमंत्रण न भेजकर अमेरिका ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि रूस लोकतांत्रिक राज्यों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं होता है। क्या रूस द्वारा अतिक्रमण की नीति को अपनाना शीत युद्ध के पश्चात् की कोई पहली घटना है? वास्तविकता में अगर अवलोकन करें तो हम यह अनुभव कर सकते है कि अमेरिका द्वारा दूसरे देशों की संप्रभुता में अतिक्रमण करना कोई नई घटना नहीं है। इराक एवं अफगानिस्तान इसके सबसे उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते है। अमेरिका द्वारा सोवियत संघ के विघटन एवं 9/11 की घटना के पश्चात् से मध्य एशिया के देशों के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया गया वह अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

रूस के द्वारा यूक्रेन के ऊपर आक्रमण एवं अतिक्रमण को इन सब तथ्यों से सार्थक मानना उचित नहीं है परन्तु यदि स्पष्ट स्तर पर अवलोकन किया जाएं तो अमेरिका इस युद्ध को प्राथमिक स्तर पर ही रोकने का कार्य कर सकता था। नाटो की सदस्यता के प्रश्न पर आरम्भ हुए युद्ध में नाटो की ओर से यूक्रेन को कोई सहायता न मिलना तथा अमेरिका द्वारा किसी

नाटो सदस्य द्वारा सहायता की पहल को स्वीकृति प्रदान ना करने की प्रक्रिया को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के यथार्थवादी समूह की विचारधारा से भी समझा जा सकता है। यथार्थवादियों का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई भी "स्थाई मित्र एवं शत्रु नहीं होता" है तथा प्रत्येक राज्य अपनी सुरक्षा के लिए अग्रसर होते है, यह कथन वर्तमान स्थिति में सार्थक होता अवलोकित हो रहा है। इस युद्ध से अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में आत्म–निर्भरता का पक्ष भी प्रस्तुत हो रहा है। क्षेत्रीय संगठन एवं सॉफ्ट पॉवर जैसी संकल्पना को प्रोत्साहित करने वाले विशेषज्ञ भी इस विषय से इंकार नहीं कर सकते है कि वर्तमान समय में तीन माह से अधिक हो रहे इस युद्ध में प्रत्येक राज्य के लिए यह आवश्यक कर दिया है कि वह सुरक्षा के स्तर पर स्वयं को आत्मनिर्भर करें। रूस की युद्ध करने की हठ के समक्ष यूक्रेन की दृढ़ निश्चितता ज्यादा भारी नजर होती अवलोकित की जा सकती है परन्तु इस युद्ध को पूर्णतः थामने का अंदेशा मात्र रूस के हाथों में रह गया है।

♦♦♦♦♦

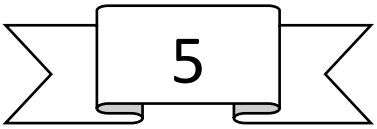

5

रूस–यूक्रेन युद्धः भारतीय निष्पक्षता की नीति

सृष्टी

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

24 फरवरी 2022 को रूस ने यूक्रेन पर पूर्ण आक्रमण प्रारंभ किया। रुस के साथ यूक्रेन की सीमा पर तनाव वर्षों से अपने उच्चतम स्तर पर है। रूस द्वारा संभावित आक्रमण के भय से, अमेरिका व नाटो यूक्रेन के लिए समर्थन बढ़ा रहे है। इस आलेख में, रूस व यूक्रेन के मध्य तनाव का कारण तथा नवीन घटनाक्रमों का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

रूस–यूक्रेन संघर्ष प्रष्ठभूमि

सोवियत संघ के विघटन के पश्चात 1991 मे यूक्रेन को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। 1991 तक यूक्रेन सोवियत संघ का सदस्य था, जब यह विघटित हुआ तो रूस ने तब देश को अपने क्षेत्र मे करने का प्रयास किया। 2014 में, यूक्रेन के पूर्वी औधौगिक गढ़, डोनेट्स्क बेसिन में एक अलगाववादी विद्रोह आरंभ हुआ। क्रिमिया के आक्रमण व अधिग्रहण के कारण रूस ने इस क्षेत्र में समुन्द्री लाभ प्राप्त किया। परिणामस्वरूप, अमेरिका व यूरोपीय संघ दोनों ने यूक्रेन की अखंडता की रक्षा करने का संकल्प लिया।

रूस के लिए यूक्रेन का महत्व

रूस व यूक्रेन ने अधिक वर्षों से सांस्कृतिक व भाषाई संबंध सांझा किए है।

- रूस के पश्चात् यूक्रन सोवियत संघ का सबसे अधिक शक्तिशाली देश था।
- यूक्रन वाणिज्यक उद्योगों, कारखानों व रक्षा निर्माण का केंद्र रहा है।
- यूक्रन रूस को काला सागर तक पहुंच व भूमध्य सागर के लिए महत्वपूर्ण संपर्क भी प्रदान करता है।

रूसी आक्रमण के कारण

रूसी आक्रमण के निम्न कारण है।

- ➢ आर्थिक कारक

रूस यूक्रेन के आर्थिक महत्व को देखते हुए, यूरेशियन आर्थिक समुदाय में यूक्रेन की सदस्यता की मांग की, जो एक मुक्त व्यापार समझौता है जो 2015 में अस्तित्व में आया था।

अपने विस्तृत बाजार व उन्नत कृषि तथा औधौगिक उत्पादन के साथ, यूक्रेन को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। किन्तु यूक्रेन ने समझौते में सम्मिलित होने से अस्वीकृत कर दिया।

भू–राजनीतिक व सामरिक कारण

रूस का मानना है कि उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) द्वारा पूर्व की ओर विस्तार मे रूस के हितों के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है। और इसलिए नाटो से लिखित सुरक्षा प्रत्याभूति की मांग की गई है। अमेरिका के नेतृत्व में नाटो ने रूस की अंतरमहाद्वीपीय दूरी की मिसाइलों की प्रतिस्पर्धा करने के लिए पोलैंड व चेक गणराज्य जैसे देशों में पूर्वी यूरोप में मिसाइल रक्षा प्रणाली स्थापित करने की योजना बनाई है।

रूस यूक्रेन के साथ अपनी सीमा पर सैन्य निर्माण में सम्मिलित रहा है, जो नाटो का एक महत्वाकांक्षी सदस्य है। रूस ने कहा है कि उसकी सेना की तैनाती नाटो के निरंतर पूर्व की ओर विस्तार के प्रतिउत्तर के रूप में है। रूस का तर्क है कि उसके इन कदमों का उद्देश्य अपने स्वयं के सुरक्षा विचारों की रक्षा करना है।

- रूस ने यूक्रेन के साथ अपनी सीमा पर लगभग 1,00,000 सैनिक लगाए हुए है।
- रूस अमेरिका से आश्वासन चाहता है कि यूक्रेन को नाटो में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
- इसके परिणामस्वरूप रूस व पश्चिम के मध्य तनाव उत्पन्न हो गया, जो यूक्रेन का समर्थन करते रह है। अमेरिका ने यूक्रेन को आश्वासन दिया है कि रूस द्वारा आक्रमण के विषय में वह निर्णायक प्रतिक्रिया देगा।
- यू एस ने नाटो की "ओपन डोर पॉलिसी" को परिवर्तित करने से अस्वीकृत कर दिया है, जिसका अर्थ है कि नाटो अधिक सदस्यों को सम्मिलित करना निरंतर रखेगा।
- यू एस का भी कहना है कि वह यूक्रेन को प्रशिक्षण व हथियार देना निरंतर रखेगा।
- जर्मनी ने भी रूस को यह चेतावनी दी है कि यदि रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया तो नार्ड स्ट्रीम 2 पाइप्लाइन को रोक दिया जाएगा।
- यू एस यूक्रेन पर आक्रमण के प्रयासों के विषय में नए आर्थिक प्रतिबंध लगाकर रूस को धमकी देता है।

इसके साथ ही रूस–यूक्रेन संकट का भारत पर भी प्रभाव पड़ा है। रूस के आक्रमण से भारत पर पश्चिमी गठबंधन व रूस में से किसी एक को चुनने का दबाव होगा। रूस के साथ भारत को संबंध सुदृढ़ बनाए रखना ही भारत के राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करता है। भारत को रूस के साथ एक सुदृढ़ रणनीतिक गठबंधन बनाए रखना होगा। परिणामस्वरूप, भारत रूस को अलग–थलग करने के उद्देश्य से किसी भी पश्चिमी रणनीति में सम्मिलित नहीं हो सकता है।

यूक्रेन के साथ विषय यह है कि विश्व शीघ्रता से आर्थिक व भू–राजनीतिक रूप से परस्पर जुड़ा हुआ प्रदर्शित हो रहा है। इस क्षेत्र मे उपस्थित सुदृढ़ भारतीय प्रवासियों पर भी प्रभाव पड़ रहा है, जिसमें हजारों भारतीय छात्रों का जीवन संकट में है।

अतः भारत ने इस क्षेत्र में व अन्य क्षेत्रों मे भी दीर्घ–कालिक शांति व स्थिरता के लिए निरंतर राजनयिक प्रयासों के माध्यम से स्थिति का शांतिपूर्ण समाधान का आहन्न किया है। 2020, में भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में यूक्रेन द्वारा प्रायोजित एक प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान किया, जिसमें क्रीमिया मे कथित मानवाधिकारों के उल्लंघन की निंदा करने की मांग की गई थी। भारत की स्थिति अधिकतर तटस्थता मे निहित रही है। भारत ने प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस बारे में कहा था कि हम बड़े समूहों से दूर रहेंगे, जिससे कि हम सभी देशों के प्रति मित्रवत बने रहे और हम किसी भी समूह में सम्मिलित नहीं होंगे। इसी के आधार पर भारत का व्यवहार संतुलित सिद्धांतों पर आधारित रहा है। भारत लोकतंत्र, संवाद, क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान व यूक्रेन की संप्रभुता के लिए खड़ा हुआ है, हमें रणनीतिक रूप से तटस्थ रहना है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

इसके साथ–साथ अन्य पश्चिमी देशों के साथ अमेरिका द्वारा यूक्रेन व रूस के मध्य तनाव को काम करने के लिए राजनयिक चैनलों के माध्यम से शांति प्रक्रिया को पुनर्जीवित करने की आशा है। जो एक समय लेने वाली प्रक्रिया है।

♦♦♦♦♦

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281